॥भक्तामर॥

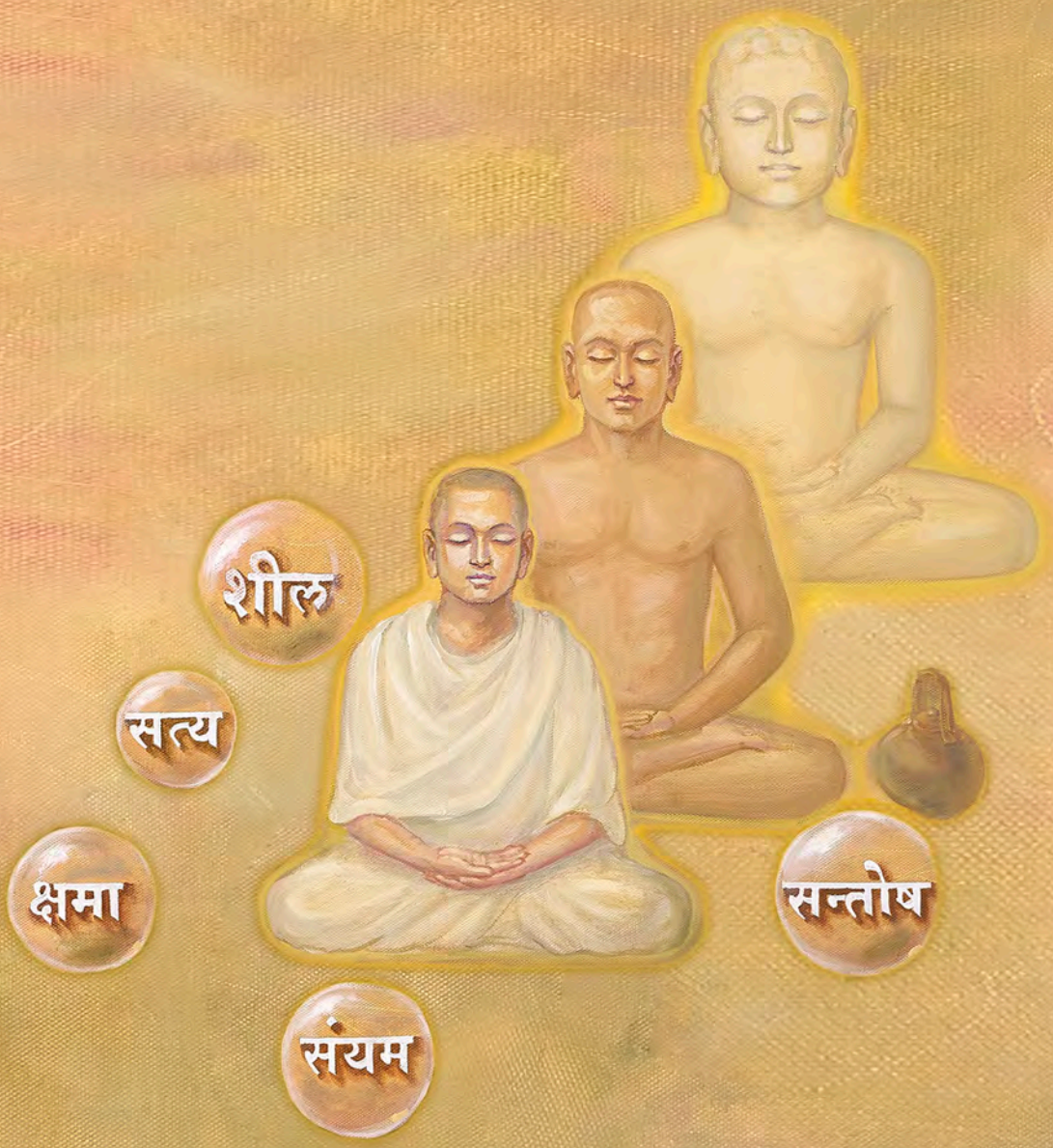

नाऽद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

श्री मानतुंग आचार्य विरचित

आद्य तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ जिनेन्द्र स्तवन

भक्तामर-स्तोत्र

Exhibit

GURU KAHAN ART MUSEUM
www.gurukahanmuseum.org

Sponsor

Shree
Kundkund - Kahan
Parmarthik Trust
Mumbai

Organiser

PAINTERNET
ART EXCHANGE
www.painternet.com

First Published 2021
By Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust

All rights reserved only with:
Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg,
Vile Parle (West), Mumbai - 400056.INDIA.
Tel. No.: +91 22 2613 0820
Telefax: +91 22 2610 4912
Email: info@vitragvani.com
Web: www.vitragvani.com

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publishers.

Conceptualized by **Nikhil Mehta & Rahul Jain**
Design by **7thSense**
Photography by **Mr. Vipul Patel**
Edited and visualized by **Rahul Jain**

ISBN No.: 978-93-81057-52-0
Price: INR 200/- & US $5

ऋषभ...देव

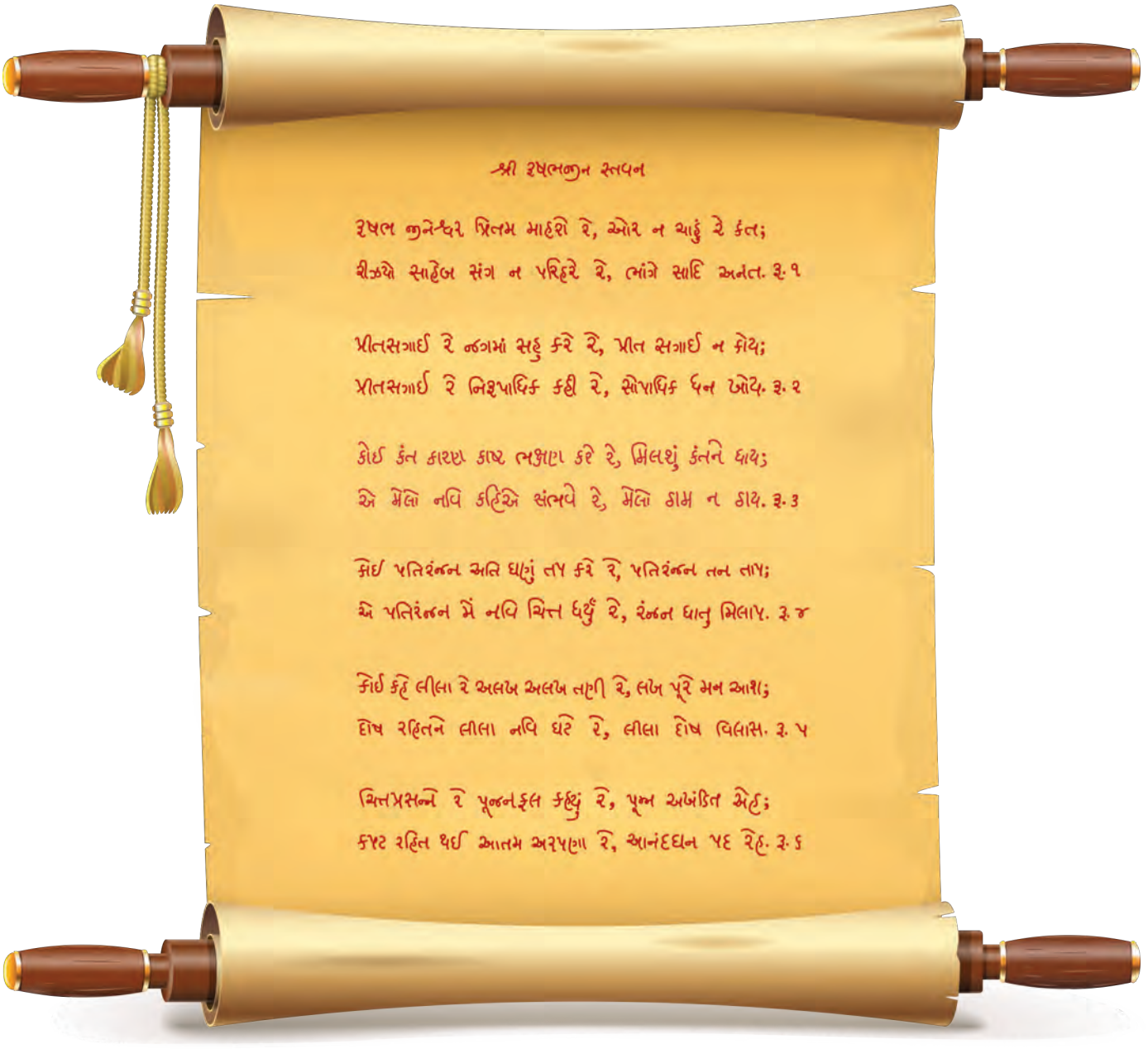

શ્રી ઋષભજીન સ્તવન

ઋષભ જીનેશ્વર પ્રિતમ માહરો રે, ઓર ન ચાહું રે કંત;
રીઝયો સાહેબ સંગ ન પરિહરે રે, ભાંગે સાદિ અનંત. ૩. ૧

પ્રીતસગાઈ રે જગમાં સહુ કરે રે, પ્રીત સગાઈ ન કોય;
પ્રીતસગાઈ રે નિરૂપાધિક કહી રે, સોપાધિક ધન ખોય. ૩. ૨

કોઈ કંત કારણ કાષ્ટ ભક્ષણ કરે રે, મિલશું કંતને ધાય;
એ મેલો નવિ કહિએ સંભવે રે, મેલો ઠામ ન ઠાય. ૩. ૩

કોઈ પતિરંજન અતિ ઘણું તપ કરે રે, પતિરંજન તન તાપ;
એ પતિરંજન મેં નવિ ચિત્ત ધર્યું રે, રંજન ધાતુ મિલાપ. ૩. ૪

કોઈ કહે લીલા રે અલખ અલખ તણી રે, લખ પૂરે મન આશ;
દોષ રહિતને લીલા નવિ ઘટે રે, લીલા દોષ વિલાસ. ૩. ૫

ચિત્તપ્રસન્ને રે પૂજનફલ કહ્યું રે, પૂજ અખંડિત એહ;
કપટ રહિત થઈ આતમ અરપણા રે, આનંદઘન પદ રેહ. ૩. ૬

श्री ऋषभ जिन-स्तुति...
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा हस्त लिखित

अध्यात्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

भक्तामर–स्तोत्र (श्री आदिनाथ जिन-स्तुति)

: प्रस्तावना :

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां वन्दे तद्गुण लब्धये।।

श्रमण भक्ति परम्परा में मुनि श्री मानतुङ्गाचार्य द्वारा रचित भक्ति रस का यह अनुपम स्तोत्र युगों-युगों से कोटि-कोटि भक्तों का कंठाहार बना हुआ है। भक्तामर स्तोत्र एक भक्ति काव्य है, जिसमें इस युग के आदि तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ की स्तुति की गयी है। इस भक्ति काव्य की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसे किंचित फेरफार के साथ जैन समाज के दिगंबर और श्वेतांबर - सभी लोग इस स्तोत्र द्वारा प्रतिदिन वीतरागी परमात्मा की स्तुति, भक्ति एवं आराधना करके अपने जन्म-जन्मांतरों के पापों को क्षीण करते रहे हैं।

मुनिराज मानतुंग द्वारा रचित इस स्तोत्र में ४८ काव्य हैं और एक-एक काव्य में जिनेन्द्र देव की अलग-अलग प्रकार से स्तुति कर वीतरागता की अनुमोदना व्यक्त की है। इस काव्य में जहां भगवान के आंतरिक वैभव की स्तुति की गई है, वहीं अष्ट प्रातिहार्य इत्यादि बाह्य वैभव की स्तुति करके भी विशुद्ध अध्यात्म की धारा बहाई गई है। इसी प्रकार जिनेन्द्र के भक्त को कौन-कौन से भय नहीं होते? –यह प्रतिपादन भी सहजरूप में हुआ है।

तत्त्वज्ञानियों की श्रद्धा का भाजन तो यह इसलिये है ही कि इसमें निष्काम भक्ति की भावना निहित है इसमें कहीं ईश्वर कर्तृत्व की गंध भी नहीं आ पाई है; तथा ऐसा कहीं कोई संकेत नही मिलता है, जिसके द्वारा भक्त ने भगवान से कुछ याचना की हो या लौकिक विषय-वांछा की हो। साहित्यिक रुचि वाले भी इस काव्य की साहित्यिक सुषमा से प्रभावित और आकर्षित हुये बिना नहीं रहते; क्योंकि इसकी सहज बोधगम्य भाषा, सुगम शैली, अनुप्रासादि अलंकारो की दर्शनीय छटा, वसन्ततिलका जैसे मधुरमोहक गेय छन्द, उत्कृष्ट भक्ति द्वारा प्रभावित शान्त रस की अविछिन्न धारा –इन सबने मिलकर इस स्तोत्र को जैसी साहित्यिक सुषमा प्रदान की है वैसी बहुत कम स्तोत्रों में मिलती है।

स्तोत्र की इन सभी विशेषताओं से प्रभावित होकर तथा सभी जीवों को काव्य का भावभासन कराने के उद्देश्य से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा इस भक्तिपरक स्तोत्र के ऊपर धारावाही प्रवचन हुये जिसमें भक्तिप्रधान कथनों के द्वारा उत्पन्न भ्रान्तियों का निराकरण करके उनका समुचित समाधान उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन काव्यों के प्रवचनों के मूलाधार से ४८ पेंटिंग (प्रतिकाव्य) तैयार की गई हैं जिन्हें प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहित किया गया है। इस कार्य को चित्ररूप देने में जो कार्य चित्रकार श्री प्रशांत शहा द्वारा किया गया है उसके लिये संस्था उनकी आभारि है तथा इस कार्य में कार्यरत गुरु कहान कला संग्रहालय की पूरी टीम को धन्यवाद ज्ञापित करती है।

अंत में हम आशा करते हैं कि पूर्व में प्रकाशित समयसार दृष्टान्त वैभव तथा उत्तम दश धर्म चित्र पुस्तिका की तरह यह पुस्तक भी भक्तामर स्तोत्र पाठी और आराधकों के लिये अत्यन्त उपयोगी साबित होगी। स्वचिंतन के साथ सभी जीव इन पेंटिंग्स के माध्यम से "भक्तामर स्तोत्र" के रहस्य को समझकर अपना मोक्षमार्ग सरल करें, यही भावना सह...

ट्रस्टीगण,

– श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई

श्री मानतुंग आचार्य विरचित आद्य तीर्थंकर भगवान
श्री आदिनाथ जिनेन्द्र स्तवन

भक्तामर–स्तोत्र

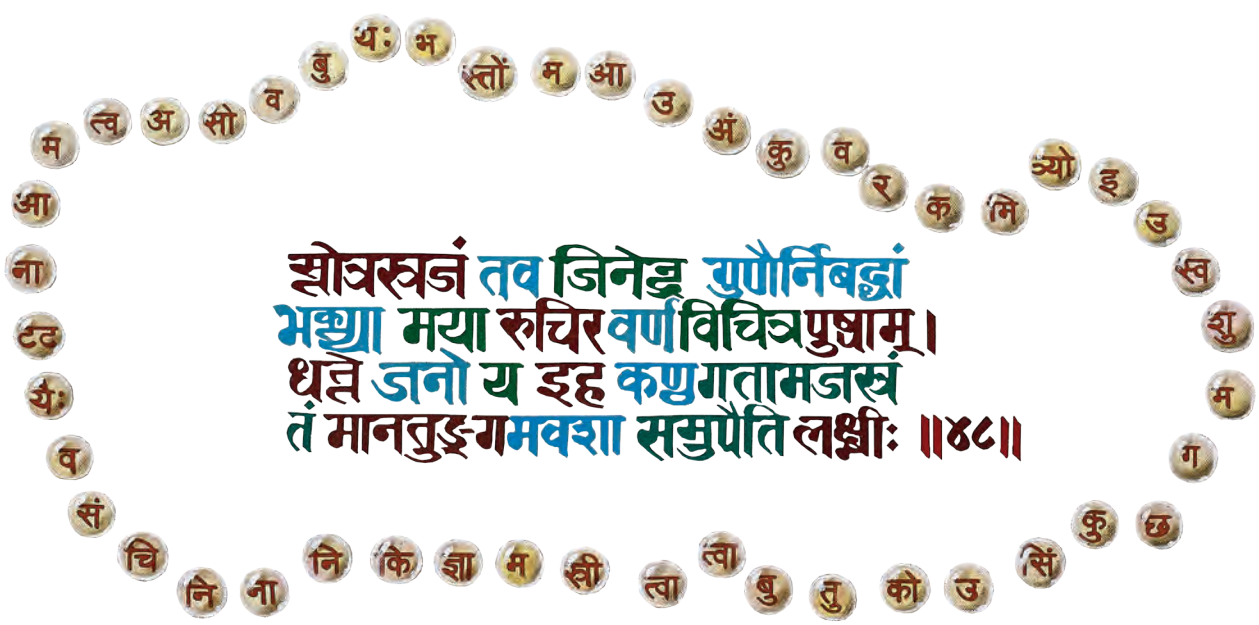

36" x 48" | Oil on Canvas

सुर-नत-मुकुट रतन-छवि करैं, अन्तर पाप-तिमिर सब हरैं।
जिनपदवंदों मन-वच-काय, भव-जल-पतित उधरन-सहाय ।।१।।

भक्तिमान देवताओं के नमस्कार करते हुए नम्रीभूत हुए मस्तक पर मुकुटों में लगी हुई मणियों को प्रकाशित करनेवाले; पापरूप अन्धकार को विनष्ट करनेवाले; संसार-सागर में डूबते हुए जीवों को युग के प्रारम्भ में आलम्बनरूप भगवान जिनेन्द्र के चरणयुगल को भलीभाँति प्रणाम करके, नतमस्तक होता हूँ।।१।।

36” x 48” | Oil on Canvas

श्रुत पारग इन्द्रादिक देव, जाकी थुति कीनी कर सेव ।
शब्द मनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुन-माल ।।२।।

समस्त शास्त्रों के तत्त्वज्ञान से निपुण हुई है बुद्धि जिनकी, ऐसे स्वर्ग के इन्द्रों ने तीन लोक के चित्त को मोहित करनेवाले गम्भीर और महान स्तोत्रों द्वारा जिनकी स्तुति की है, उन प्रथम जिनेन्द्र आदिनाथ की, मैं भी स्तुति करूँगा।।२।।

36” x 48” | Oil on Canvas

विबुध-वंद्य-पद मैं मति-हीन, हो निलज्ज थुति-मनसा कीन।
जल-प्रतिबिंब बुद्ध को गहै, शशि-मंडल बालक ही चहै।।३।।

जिस प्रकार जल में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को नादान बालक ही पकड़ने की चेष्टा करता है, कोई भी बुद्धिमान चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को पकड़ने की चेष्टा नहीं करता, उसी प्रकार जिन जिनेन्द्र भगवान का सिंहासन भी देवों के द्वारा पूजनीय है, उन जिनेन्द्र परमात्मा की स्तुति करने के लिये मैं बुद्धिहीन तैयार हुआ हूँ, मेरा यह प्रयास उस अज्ञ बालक की तरह व्यर्थ है।।।३।।

36" x 48" | Oil on Canvas

गुन-समुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुर-गुरु पावैं पार।
प्रलय-पवन-उद्धत जल-जन्तु, जलधि तिरैको भुज-बलवंतु।।४।।

जिस प्रकार भयंकर महासमुद्र में प्रलयकाल की वायु से हजारों मगरमच्छ उछल रहे हों, उस समुद्र को क्या कभी कोई दोनों भुजाओं से तैरकर पार कर सकता है? अर्थात् नहीं, यह असम्भव है; उसी प्रकार हे गुणों के सागर आपके चन्द्रमा समान अनन्त निर्मल गुणों का वर्णन करने में देवताओं का गुरु बृहस्पति जैसा बुद्धिमान भी समर्थ हो सकता है क्या? वह भी आपके गुणों का वर्णन करने में असमर्थ है। तो मुझ जैसे अल्प ज्ञानी की क्या बात?।।४।।

36" x 48" | Oil on Canvas

सो मैं शक्तिहीन थुति करूँ, भक्तिभाव वश कछु नहिं डरूँ।
ज्यों मृगि निज-सुत पालन हेत, मृगपति सन्मुख जाय अचेत।।५।।

जिस प्रकार शक्तिहीन हिरनी वात्सल्यवश अपने बच्चे की रक्षा के लिये क्या सिंह का सामना नहीं करती? करती ही है। उसी प्रकार मैं शक्तिहीन यद्यपि आपके गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हूँ तथापि मैं भक्तिवश आपकी स्तुति करने के लिये प्रवृत्त हूँ।।५।।

36” x 48” | Oil on Canvas

मैं शठ सुधी हँसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावै राम।
ज्यों पिक अंब-कली-परभाव, मधु-ऋतु मधुर करै आराव।।६।।

जिस प्रकार कोयल मुख्यरूप से बसन्त ऋतु में ही कुहूकती है और उसका एकमात्र कारण आम की मंजरी ही है; उसी प्रकार मैं अल्प ज्ञानी विद्वानों द्वारा हँसी का पात्र बनूँगा तथापि उस कोयल की भाँति आपकी भक्ति ही मुझे बलपूर्वक आपकी स्तुति करने को विवश कर रही है।।६।।

36" x 48" | Oil on Canvas

तुम जस जंपत जन छिनमाहिं, जनम-जनम के पाप नशाहिं।
ज्यों रवि उगै फटै तत्काल, अलिवत् नील निशा-तम-जाल।।७।।

जिस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में आच्छादित भौंरे के समान गहन अन्धकार को प्रातःकालीन सूर्य की किरणें विनष्ट कर देती है; उसी प्रकार संसारी प्राणियों के अनेक भवों से बँधे हुए पापकर्म को आपका स्तवन क्षणभर में विनष्ट कर देता है। तात्पर्य यह है कि आपके स्तवन के निमित्त से संसारी प्राणियों के अनेक भवों से बँधे हुए पापकर्म क्षणभर में नाश को प्राप्त होते हैं।।७।।

36” x 48” | Oil on Canvas

तव प्रभावतैं कहूँ विचार, होसी यह थुति जन-मन-हार।
ज्यों जल-कमल-पत्रपै परै, मुक्ताफलकी द्युति विस्तरै।।८।।

जिस प्रकार पानी की नन्हीं बूँद में स्वयं कोई चमत्कार नहीं है, परन्तु कमलिनी के स्वच्छ पत्र पर पड़ने से वह अनमोल मोती की भाँति सुशोभित होती है; उसी प्रकार मेरा तुच्छ स्तोत्र आपके प्रभाव से सज्जन पुरुषों के मन को लुभानेवाला होगा, ऐसा जानकर मैं मन्दबुद्धि होने पर भी आपकी स्तुति के लिये तत्पर हुआ हूँ।।८।।

48" x 36" | Oil on Canvas

तुम गुण-महिमा हत-दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुख-पोष।
पाप-विनाशक है तुम नाम, कमल-विकासी ज्यों रवि-धाम।।९।।

जिस तरह सूर्य की तो बात ही क्या, किन्तु उसकी किरणों के उदयमात्र से ही सरोवर में रात्रि समय से मुरझाये हुए कमल खिल उठते हैं; उसी प्रकार आपके समस्त दोषों से रहित, पवित्र गुण कीर्तन की तो बात ही क्या, आपकी चर्चामात्र से अर्थात् नाममात्र लेने से ही संसारी प्राणियों के पाप विनष्ट हो जाते हैं।।९।।

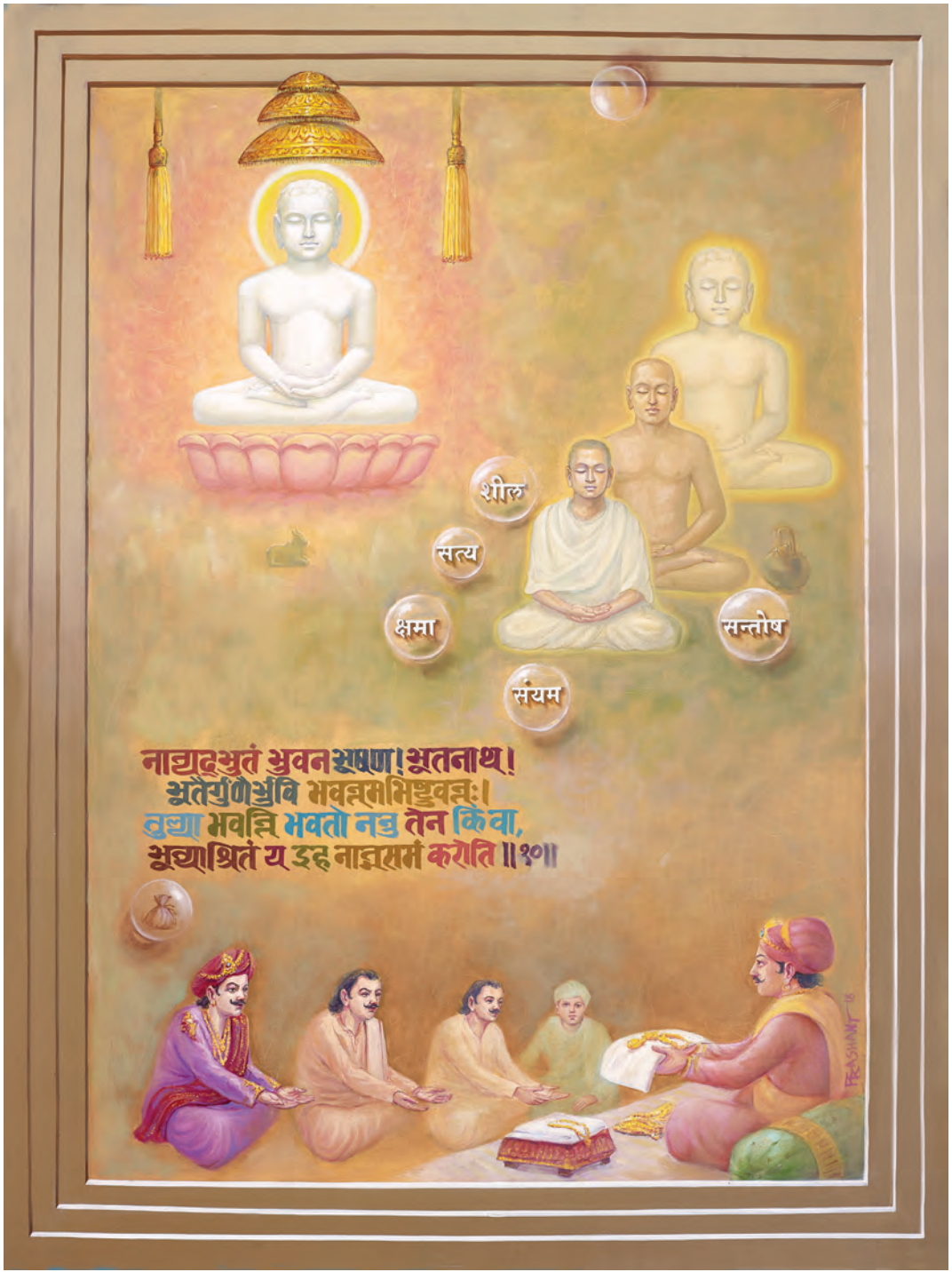

48" x 36" | Oil on Canvas

नहिं अचम्भ जो होहिं तुरन्त, तुम-से तुम गुण वरणत संत।
जो अधीन को आप-समान, करै न सो निंदित धनवान।।१०।।

जिस प्रकार संसार में जो स्वामी अपने अधीनस्थ सेवक को अपने समान सुख समृद्ध नहीं करता, तो उस स्वामी से क्या लाभ? अर्थात् योग्य स्वामी का सेवक अन्ततः स्वामी सदृश्य महान बन ही जाता है; उसी प्रकार हे जगत के भूषण! हे जगन्नाथ! अनेकानेक वास्तविक सद्गुणों के वर्णन से आपकी स्तुति करनेवाले भव्य जन निश्चित ही आप समान हो जाते हैं, यह कोई महा आश्चर्य की बात नहीं है।।१०।।

36" x 48" | Oil on Canvas

इकटक जन तुमको अविलोय, अवरविषैं रति करै न सोय।
को करि क्षार-जलधि जल-पान, क्षीर नीर पीवै मतिमान।।११।।

जिस तरह क्षीरसागर का जल चन्द्रमा की किरणों के समान अति निर्मल और स्वच्छ होता है, उस जल को जो एक बार पी ले तो क्या वह कभी समुद्र के खारे जल को पीना चाहेगा? इसी प्रकार हे प्रभु! आपका अलौकिक सौन्दर्य बिना पलक झपकाये एकटक देखने योग्य है, ऐसे आप जिनेन्द्र के दर्शन करने के पश्चात् अन्य किसी के दर्शन की अभिलाषा हो सकती है? अर्थात् वह अन्य किसी के दर्शन से सन्तुष्ट नहीं हो सकता।।११।।

36" x 48" | Oil on Canvas

प्रभु तुम वीतराग गुन-लीन, जिन परमाणु देह तुम कीन!
हैं तितने ही ते परमाणु, यातैं तुम-सम रूप न आनु।।१२।।

हे तीन लोक के शिरोमणि! शान्तरस की छविवाले जिन परमाणुओं से आपका परमौदारिक शरीर निर्मित हुआ है, वे परमाणु संसार में उतने ही थे, क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी तल पर आपके समान दूसरा कोई सुन्दर दृष्टिगोचर नहीं होता।।१२।।

36" x 48" | Oil on Canvas

कहँ तुम मुख अनुपम अविकार, सुर-नर-नाग-नयन-मनहार।
कहाँ चन्द्र-मण्डल सकलंक, दिनमें ढाक-पत्र सम रंक।।१३।।

हे भगवन्! आपके मुखमण्डल को चन्द्रमा की उपमा देना, क्या समुचित है? नहीं! कहाँ आपका मुखमण्डल जो देव, मनुष्य और नागकुमार जाति के देवों को मोहित कर लेता है और त्रिलोक की सम्पूर्ण उपमाओं को पराजित करनेवाला सदा प्रकाशमान रहता है और कहाँ वह कलंकयुक्त चन्द्रमा जो दिन में टेशू के पत्र समान कान्तिहीन हो जाता है।।१३।।

48” x 36” | Oil on Canvas

पूरन-चन्द्र-ज्योति छविवंत, तुम गुन तीन जगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार।।१४।।

हे त्रिभुवन के नाथ! पूर्णमासी के चन्द्रमा की कलाओं के समूह समान आपके निर्मल गुण त्रिलोक में व्याप्त हैं, सो ठीक ही है, जिसने एक अद्वितीय त्रिलोकनाथ का आश्रय लिया हो, उसे इच्छानुसार विचरण करने से कौन रोक सकता है? अर्थात् कोई नहीं। तात्पर्य यह है कि आपके द्वारा दर्शाया गया मार्ग सदैव जयवन्त रहता है।।१४।।

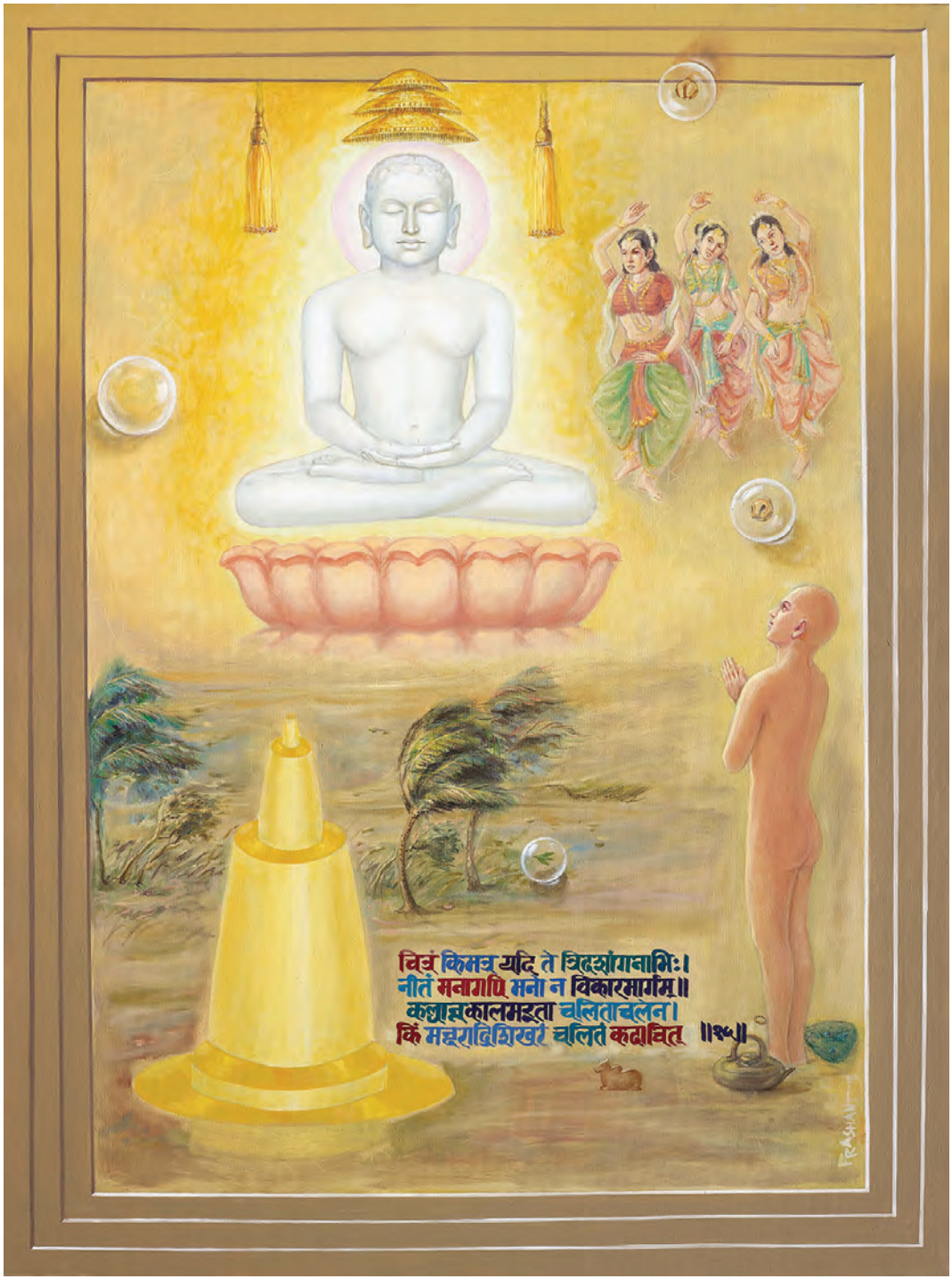

48” x 36” | Oil on Canvas

जो सुर-तिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरु-शिखर डगमगै न धीर।।१५।।

हे वीतरागी! स्वर्ग की अप्सराओं ने भी आपके सन्मुख आकर आपको विचलित करने के अनेक प्रयास किये, किन्तु वे आपके विरक्त मन में क्षण भर भी विकार उत्पन्न कराने में असमर्थ रही, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? जिस प्रकार पर्वतों को भी उखाड़ कर खण्ड-खण्ड कर देनेवाली प्रलयकाल की वायु क्या सुमेरु पर्वत को कम्पित कर सकती है? कभी नहीं कर सकती।।१५।।

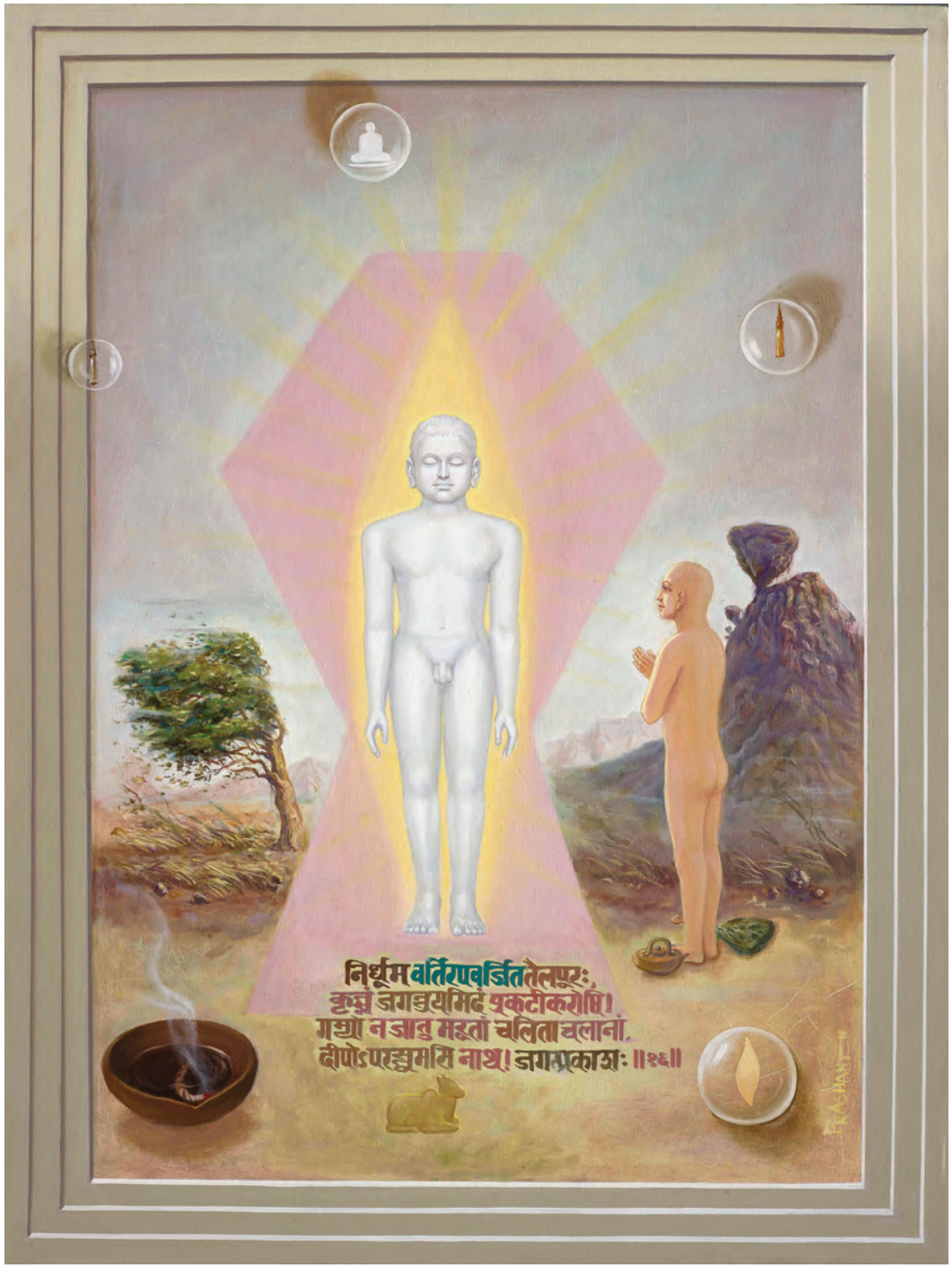

48" x 36" | Oil on Canvas

धूमरहित वाती गत नेह, परकाशै त्रिभुवन घर एह।
वात-गम्य नाहीं परचण्ड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड।।१६।।

हे नाथ! आप समस्त बाह्य अपेक्षाओं और दोषों से रहित निर्मल ज्योति हो; आप सकल जगत को प्रकाशित करनेवाले वह अलौकिक दीपक हो, जिसे न बत्ती की आवश्यकता है, न तेल की, न आपमें धुआँ निकलता है, आप ऐसी निर्मल ज्योति हो। विशाल पर्वतों को कम्पित कर देनेवाली वायु भी आपको प्रभावित नहीं कर सकती। दीपक तो घर के एक कोने को प्रकाशित करता है किन्तु आप तो सम्पूर्ण त्रिलोक को एकसाथ प्रकाशित करते हैं।।१६।।

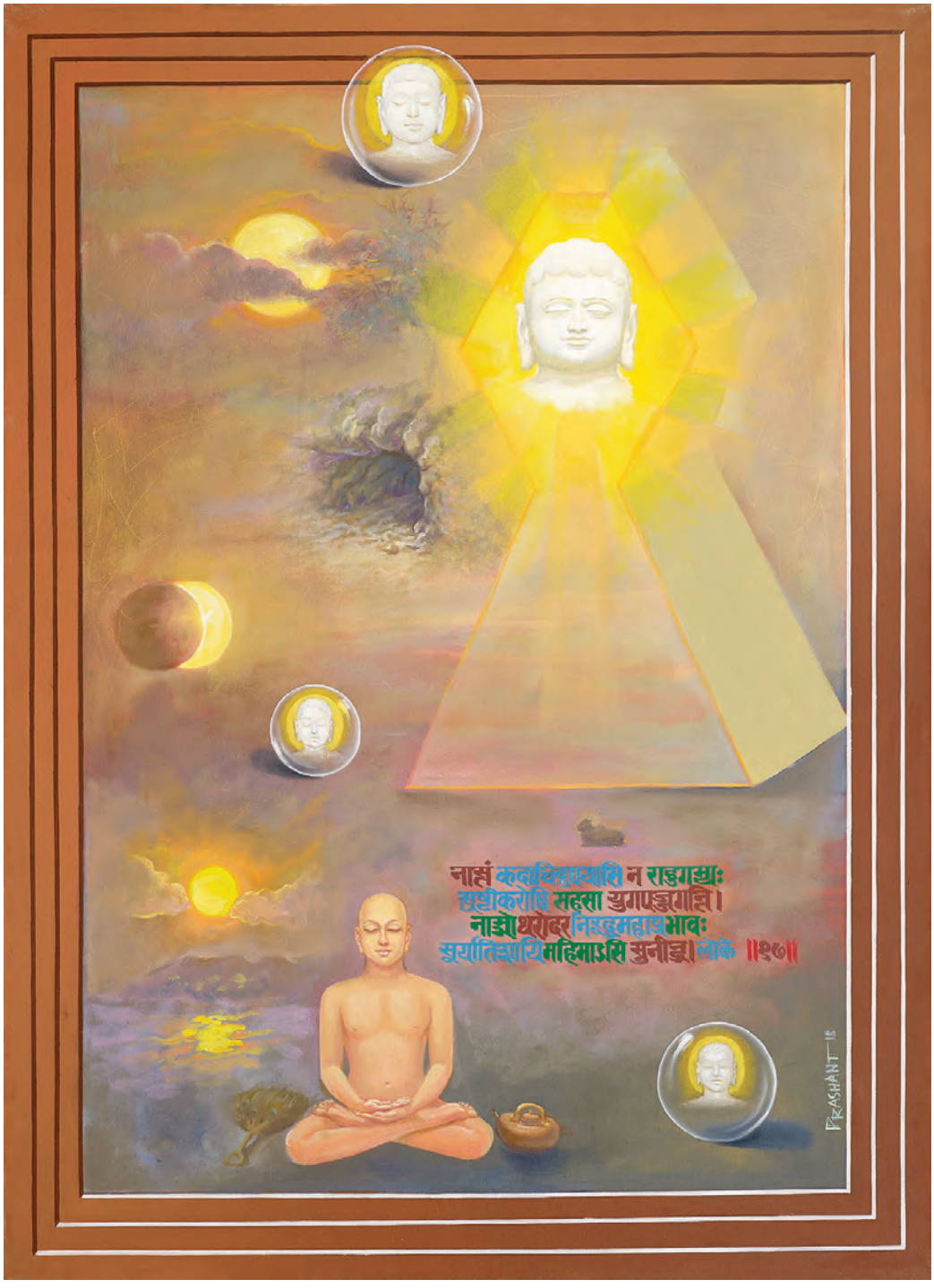

48" x 36" | Oil on Canvas

छिपहु न लुपहु राहु की छाँहिं, जग-परकाशक हो छिन माहिं।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार, रवितैं अधिक धरो गुणसार।।१७।।

हे मुनीन्द्र! आप तो सूर्य से भी अधिक महिमावन्त हैं, क्योंकि सूर्य प्रतिदिन उदित होने के पश्चात् रात्रि में अस्त हो जाता है किन्तु आपका केवलज्ञानरूपी सूर्य सदा प्रकाशमान रहता है, कभी अस्त नहीं होता। सूर्य राहु के द्वारा ग्रस्त किया जाता है और सूर्य का प्रकाश निश्चित स्थानों पर ही पहुँचता है तथा सूर्य बादलों द्वारा भी आच्छादित कर लिया जाता है किन्तु हे मुनीन्द्र! आपको न तो बादल आच्छादित कर सकते हैं, न राहु ग्रस्त कर सकता है; आपका केवलज्ञान तो एक समय में सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करता है। आपके प्रभाव को संसार की कोई शक्ति नहीं रोक सकती। तात्पर्य यह है कि सूर्य की महिमा सीमित है किन्तु आपकी असीमित। इसलिए सूर्य से आपकी उपमा नहीं की जा सकती।।१७।।

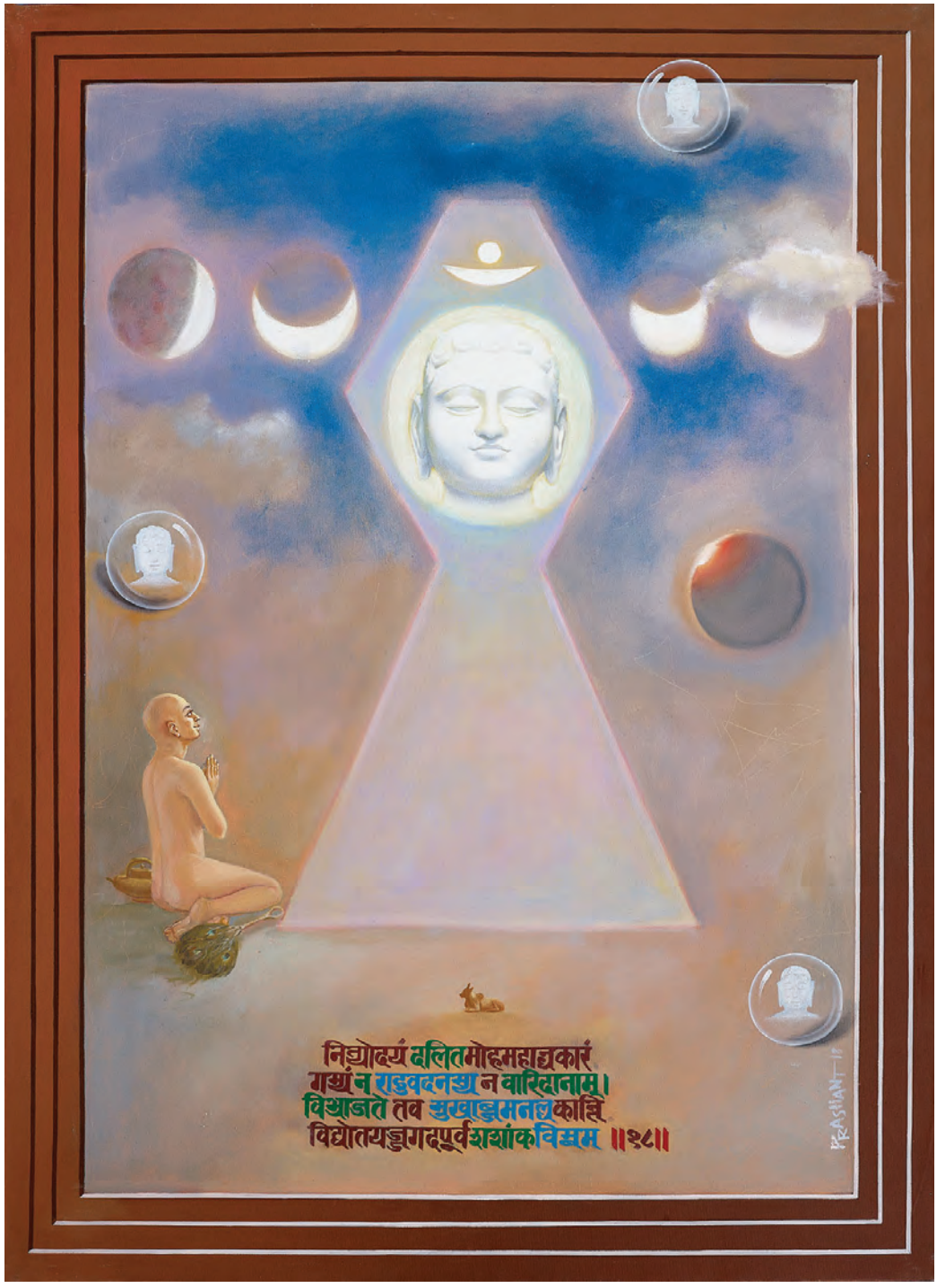

48" x 36" | Oil on Canvas

सदा उदित विदलित तममोह, विघटित मेघ राहु अवरोह।
तुम मुख-कमल अपूरब चंद, जगत-विकासी जोति अमन्द।।१८।।

हे जिनेन्द्रदेव! आपका मुखमण्डल सदा उदित रहनेवाला अद्‌भुत चन्द्रमा है, जिसने मोहरूपी अन्धकार को नष्ट कर दिया है, जो अत्यन्त प्रकाशमान है, जिसे न राहु के द्वारा ग्रहण किया जा सकता है और न बादल छिपा सकते हैं और जो सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता हुआ अलौकिक चन्द्रमण्डल की भाँति सुशोभित होता है।।१८।।

36” x 48” | Oil on Canvas

निश-दिन शशि-रवि को नहिं काम, तुम मुख-चंद हरै तम-धाम।
जो स्वभावतैं उपजै नाज, सजल मेघ तैं कौनहु काज।।१९।।

जिस प्रकार पूर्णरूप से पके हुए धान्य के खेतों से भूमण्डल शोभित हो रहा हो तो फिर जल के भार से झुके हुए बरसनेवाले बादलों से क्या लाभ है? कुछ भी लाभ नहीं। उसी प्रकार हे स्वामिन्! आपके मुखरूपी चन्द्र ने ही अन्धकार को नष्ट करके सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित कर दिया है, तब फिर रात्रि में चन्द्रमा और दिन में सूर्य की क्या आवश्यकता है? कुछ भी आवश्यकता नहीं है।।१९।।

36" x 48" | Oil on Canvas

जो सुबोध सोहै तुम माहिं, हरि हर आदिक में सो नाहिं।
जो द्युति महा-रतन में होय, कांच-खण्ड पावै नहिं सोय।।२०।।

जिस प्रकार जैसा तेज और प्रकाश बहुमूल्य रत्नों में पाया जाता है, वैसा काँच के टुकड़ों में सम्भव नहीं। भले ही वह धूप में रखा हुआ सूर्य की किरणों से कितना ही चमक क्यों न रहा हो। उसी प्रकार हे भगवन्! त्रिलोक को प्रकाशित करनेवाला दिव्यज्ञान जैसा आपमें सुशोभित हो रहा है, वैसा हरि-हरादिक लौकिक देवताओं में नहीं।।।२०।।

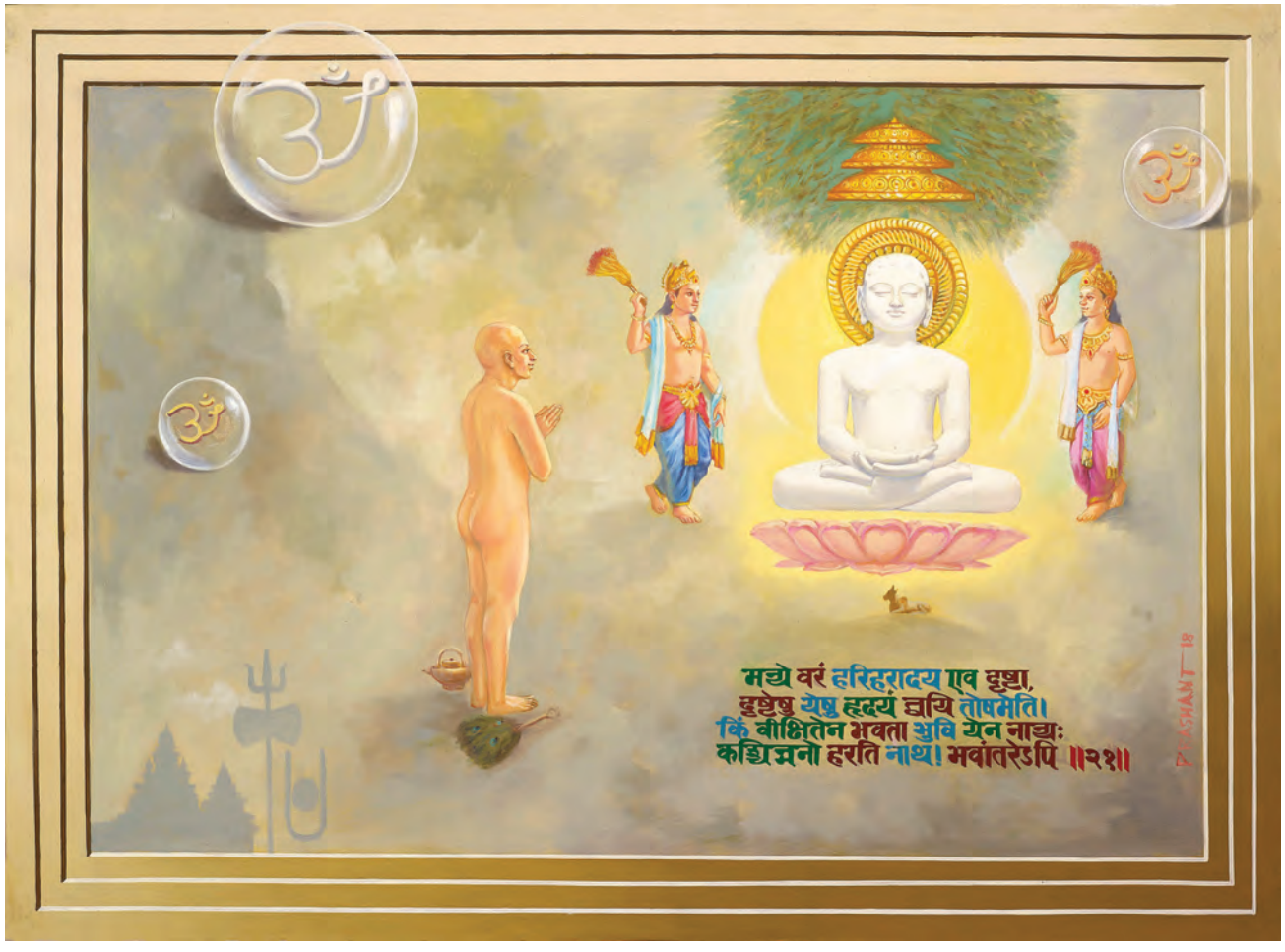

36" x 48" | Oil on Canvas

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया। स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।।
कछु न तोहि देख के जहाँ तुही विशेखिया। मनोग चित्त-चोर और भूल हूँ न पेखिया।।२१।।

हे भगवन! अन्य देवताओं के दर्शन करते हैं तो वे राग-द्वेषयुक्त ज्ञात होते हैं। इनमें वास्तविक देवत्व के दर्शन नहीं होते। अर्थात् सच्चे देव की खोज चालु रहती है और अन्त में आप जैसे वीतरागी देव के दर्शन पाकर ही सन्तोष होता है और जब एक बार आपके दर्शन कर लिये तो स्वप्न में भी अन्य देवताओं के दर्शन की इच्छा नहीं करता। असली वस्तु प्राप्त होने पर नकली कौन पसन्द करेगा। इसलिए भगवान आपके दर्शन कर लेने के पश्चात् अन्य कोई देवता पसन्द ही नहीं आता।।२१।।

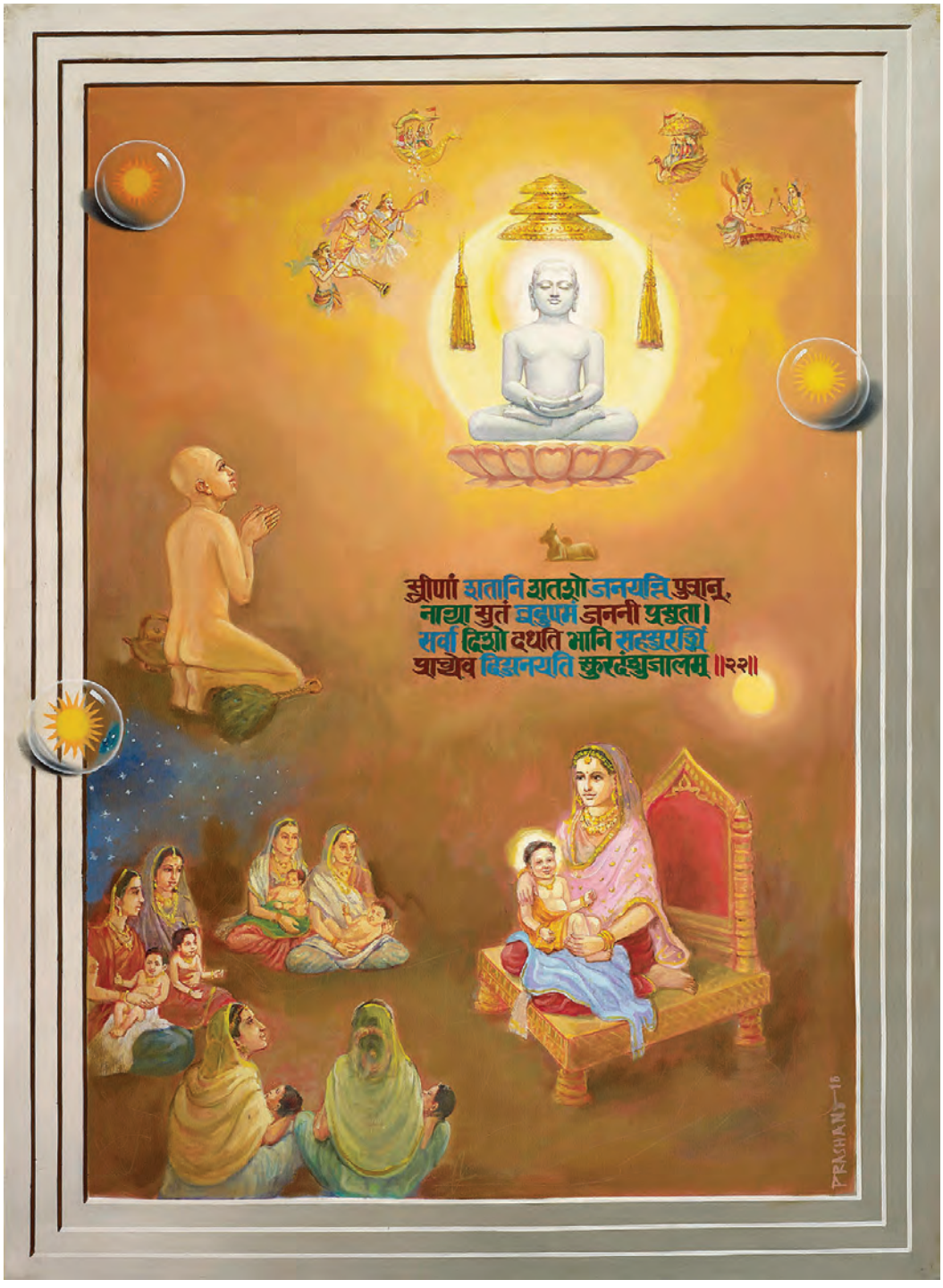

48" x 36" | Oil on Canvas

अनेक पुत्रवंतिनी नितंबिनी सपूत हैं। न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं।।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै। दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनै।।२२।।

जिस प्रकार सभी दिशायें अपने क्षेत्र में असंख्य नक्षत्र-ताराओं को प्रकट करती है किन्तु हजारों किरणों के समूह से प्रकाशित सूर्य को तो पूर्व दिशा ही उदित करती है। उसी प्रकार सैकड़ों स्त्रियाँ सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं किन्तु आपके समान महाप्रभावशाली पुत्ररत्न को किसी दूसरी माता ने जन्म नहीं दिया। तात्पर्य यह है कि आप अपनी माता के एकमात्र पुत्र हैं।।।२२।।

48" x 36" | Oil on Canvas

पुरान हो पुमान हो पुनीत पुण्यवान हो। कहैं मुनीश अन्धकार-नाश को सुभान हो।।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके। न और मोहि मोखपंथ देह तोहि टालके।।२३।।

हे मुनि नायक! मुनिजन आपको परमपूज्य मानते हैं, आप सूर्य के समान तेजवाले हैं, राग-द्वेषरूप मल से रहित अमल हैं, अज्ञानरूपी अन्धकार से सर्वथा दूर हैं, अन्तरंग शुद्धि के साथ आपका दर्शन पाकर ही साधकजन अपने जन्म-मरण को जीतते हैं अर्थात् मोक्षपद प्राप्त करते हैं। क्योंकि आपको सम्यक् प्रकार से समझे बिना मोक्षपद प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है।।२३।।

48” x 36” | Oil on Canvas

अनन्त नित्य चित्त की अगम्य रम्य आदि हो। असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो।।
महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो। अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संतमान हो।।२४।।

हे भगवन्! संसार के महाज्ञानी पुरुष आपको – अव्यय=अजर–अमर; विभु=अनन्त ऐश्वर्यशाली; अचिन्त्य=मन के द्वारा जिसका चिन्तन न किया जा सके ऐसे असंख्य गुणों से युक्त; आद्य=धर्म की प्रारम्भ में स्थापना करनेवाले; ब्रह्मा=आत्मा के आनन्द में लीन; ईश्वर=तीन लोक के स्वामी; अनन्त=अनन्त ज्ञान के धारी; अनंगकेतु=काम विकार को नष्ट करने के लिये केतु समान; योगीश्वर=मन–वचन–कायरूपी योगों पर विजय प्राप्त करनेवाले; विदितयोग=ज्ञान–दर्शन–चारित्र की योग साधना के पूर्ण ज्ञाता; अनेक=भक्तों के हृदय में नानारूप से विराजमान; एक=अद्वितीय; ज्ञानस्वरूप=शुद्ध चैतन्यरूप; अमल=क्रोधादि कषायरूप मल से रहित इत्यादि अनेक नामों से स्मरण करते हैं।।२४।।

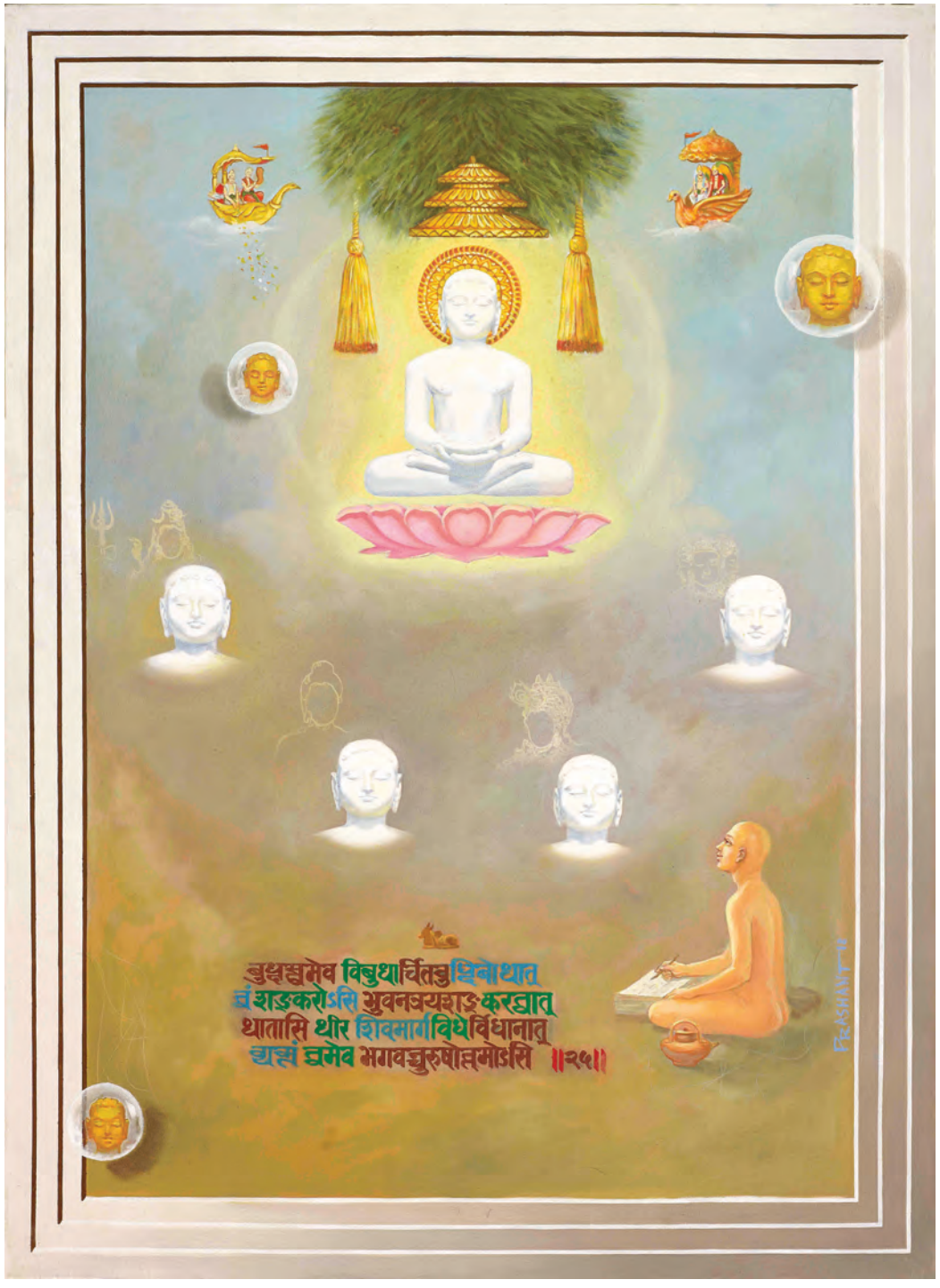

48" x 36" | Oil on Canvas

तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं। तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रये विधानतैं।।
तुही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं। नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतैं।।२५।।

देवों, गणधरों द्वारा पूजित हे प्रभु! आपमें बुद्धि / ज्ञान का पूर्णरूप से विकास हो गया है, इसलिए आप बुद्ध हो। तीन लोक के जीवों को सुख-शान्ति प्रदाता हैं, इसलिए आप शंकर हो। हे धैर्यधारक परमेश्वर! आप रत्नत्रयरूपी मोक्षमार्ग की रीति के उपदेशक हैं, इसलिए आप विधाता / ब्रह्मा हो। हे भगवन्! संसार के सब पुरुषों में उत्तम होने से आप वस्तुतः पुरुषोत्तम विष्णु हो।।२५।।

48” x 36” | Oil on Canvas

नमो करूँ जिनेश तोहि आपदा निवार हो। नमों करूँ सु भूरि भूमि-लोक के सिंगार हो।।
नमो करूँ भवाब्धि-नीर-राशि-शोष-हेतु हो। नमों करूँ महेश तोहि मोखपंथ देतु हो।।२६।।

हे तीन लोक के जीवों के दुःख को हरनेवाले नाथ! आपको नमस्कार है; हे पृथ्वीमण्डल के एकमात्र आभूषण! आपको नमस्कार है; हे संसाररूपी महासागर को शोषित करनेवाले परमेश्वर! आपको नमस्कार है; हे रागद्वेष को जीतनेवाले तीन लोक के परमेश्वर! आप मोक्षमार्ग की रीति के उपदेशक हैं, अतः आपको कोटि-कोटि नमन हो।।२६।।

48" x 36" | Oil on Canvas

तुम जिन पूरन गुन-गन भरे, दोष गर्वकरि तुम परिहरे।
और देव-गण आश्रय पाय, स्वप्न न देखे तुम फिर आय।।२७।।

हे मुनिश्वर! विश्व के सम्पूर्ण सद्गुणों को अन्यत्र कहीं आश्रय न मिलने से उन्होंने आपका ही आश्रय लिया है अर्थात् आप में दोषों को किंचित् स्थान प्राप्त नहीं है, इसलिए वे अन्य देवताओं के यहाँ आश्रय पाने की इच्छा से पहुँच गये। वहाँ यथेष्ट आश्रय पाकर वे घमण्डी हो गये, फिर तो स्वप्न में भी लौटकर आपकी ओर देखने नहीं आये, इसमें आश्चर्य की क्या बात है? जिसे अन्य कहीं आदर का स्थान प्राप्त होगा, वह भला आश्रय न देनेवाले व्यक्ति के पास लौटकर क्यों आयेगा?।।२७।।

48" x 36" | Oil on Canvas

तरु अशोक-तर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निहनंत।।२८।।

जिस प्रकार स्वच्छ चमकती हुई किरणोंवाला और अन्धकार के समूह को नष्ट करनेवाला सूर्यमण्डल घने बादलों के मध्य शोभित होता है, उसी प्रकार हे प्रभु! अशोकवृक्ष के नीचे ऊपर की ओर चमकती हुई किरणोंवाला आपका निर्मल रूप अत्यन्त भव्य दृष्टिगोचर होता है। (यहाँ तीर्थंकर भगवान के अष्ट प्रातिहार्यों में से पहले अशोकवृक्ष प्रातिहार्य का सुन्दर वर्णन है।)।।२८।।

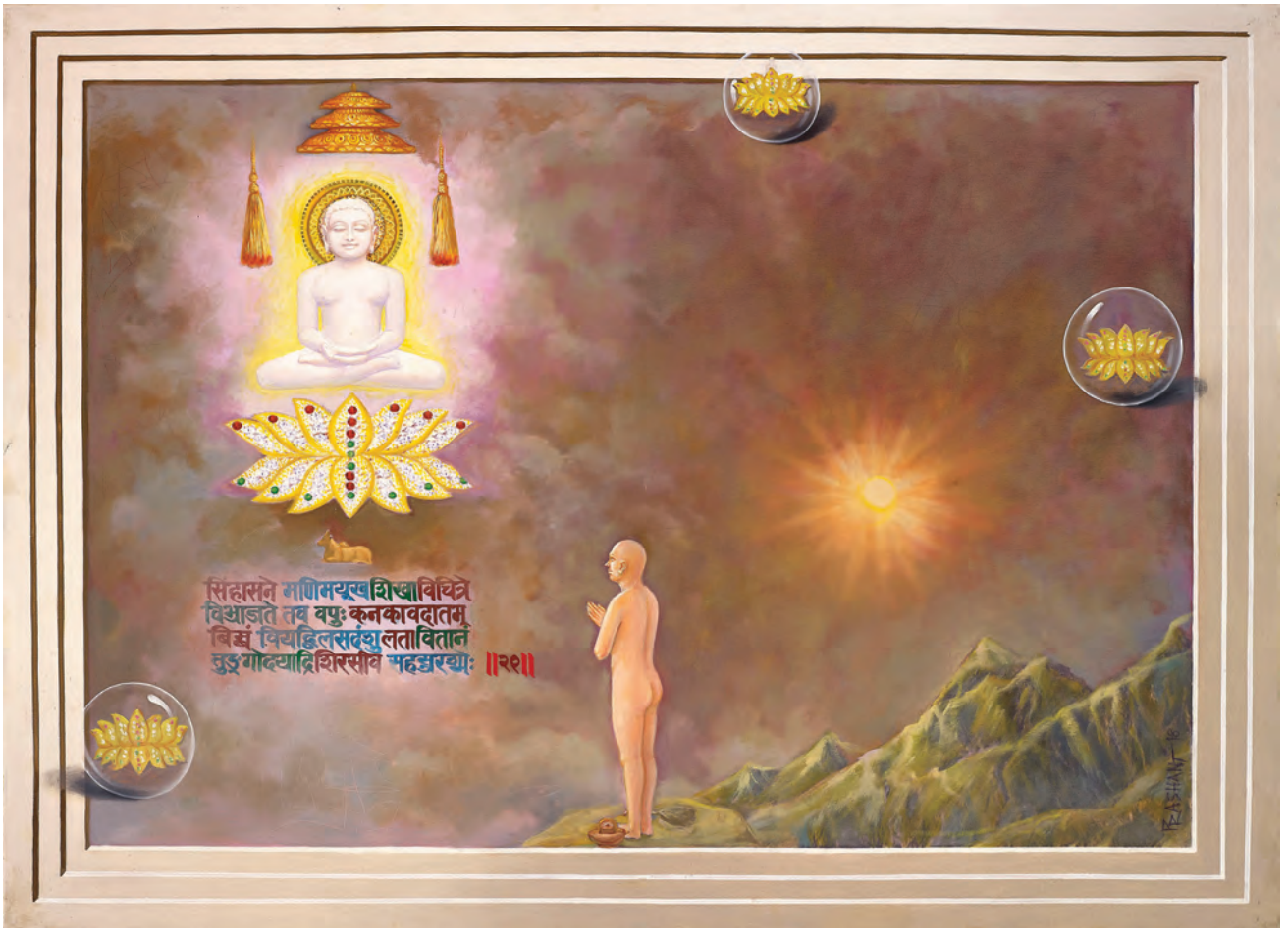

36" x 48" | Oil on Canvas

सिंहासन मणि-किरण-विचित्र, तापर कंचन-वरन पवित्र।
तुम तन शोभित किरन-विथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार।।२९।।

हे भगवन! जिस प्रकार ऊँचे उदयाचल पर्वत के शिखर पर आकाश में लता के समान दूर तक व्याप्त प्रकाशमान किरणों से सहित सूर्यबिम्ब शोभायमान होता है; उसी प्रकार मणियों की प्रभा से चित्र-विचित्र ऊँचे सिंहासन पर आपका स्वर्ण के समान प्रकाशित सुन्दर शरीर शोभायमान होता है। (यहाँ दूसरे प्रातिहार्य सिंहासन का वर्णन है।)।।२९।।

48" x 36" | Oil on Canvas

कुन्द-पहुप-सित-चमर ढुरंत, कनक-वरन तुम तन-शोभंत।
ज्यों सुमेरु-तट निर्मल कांति, झरना झरै नीर उमगांति।।३०।।

हे जिनेन्द्र! जिस प्रकार उदित होते हुए चन्द्रमा के समान निर्मल झरनों की जलधाराओं से स्वर्णगिरि सुमेरुपर्वत का ऊँचा शिखर शोभायमान होता है; उसी प्रकार देवताओं के द्वारा दोनों ओर ढोरे जानेवाले कुन्द पुष्प के समान श्वेत चँवरों की मनमोहक शोभा से सहित आपका स्वर्णवत् कान्तिवाला दिव्यरूप अत्यन्त सुन्दर दृष्टिगोचर होता है। (यहाँ तीसरे प्रातिहार्य चौंसठ चँवरों का वर्णन है।)।।३०।।

48" x 36" | Oil on Canvas

ऊँचे रहैं सूर दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपैं अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती-झालरसौं छवि लहैं।।३१।।

हे प्रभो! आपके मस्तक पर एक के ऊपर एक रहनेवाले तीनों छत्र चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हैं, सूर्य की किरणों के प्रताप को रोकनेवाले हैं और चारों ओर मोतियों की झालर से अत्यधिक शोभा प्राप्त हैं। ये तीन छत्र आपके त्रिलोक परमेश्वरता का उद्घोष कर रहे हैं अर्थात् आप तीन लोक के परमेश्वर हैं, यह विदित करा रहे हैं। (यहाँ चौथे प्रातिहार्य छत्रत्रय का वर्णन है।)।।३१।।

36" x 48" | Oil on Canvas

दुन्दुभि-शब्द गहर गम्भीर, चहुँ दिशि होय तुम्हारै धीर।
त्रिभुवन-जन शिवसंगम करैं, मानूँ जय-जय रव उच्चरै।।३२।।

हे भगवन्! आपकी गम्भीर और स्पष्ट मधुर ध्वनि से दसों दिशाओं को पूरित कर देनेवाली, तीन लोक के प्राणियों को शुभ समागम का वैभव प्रदान करनेवाली देवदुन्दुभि जहाँ आप विराजते हैं वहाँ आकाश में निरन्तर गुंजायमान होती है। यह दुन्दुभि समीचीन जिनधर्म और उसके प्रणेता तीर्थंकरदेवों की जय-जयकार करती हुई संसार में सर्वत्र आपका यशोनाद गुंजायमान करती है। (यहाँ पाँचवें प्रातिहार्य देवदुन्दुभि का वर्णन है।)।।३२।।

48" x 36" | Oil on Canvas

मन्द पवन गन्धोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पहुप सुवृष्ट।
देव करैं विकसित दल सार, मानौं द्विज-पंकति अवतार।।३३।।

हे नाथ! आपके समवसरण में गन्धोदकवृष्टि से पवित्र मन्द पवन के झोंकों से बरसनेवाली देवों द्वारा पुष्प वर्षा बहुत सुन्दर ज्ञात होती है। उसमें मन्दार, सुन्दर, नमेरु, पारिजात और सन्तानक आदि कल्पवृक्षों के सुगन्धित पुष्प निरन्तर खिरते रहते हैं। जब आकाश से पुष्प बरसते हैं तो ऐसा ज्ञात होता है कि मानो आपके वचन अर्थात् दिव्यध्वनि की पंक्तियाँ ही बरस रही हैं। (यहाँ छठे प्रातिहार्य पुष्पवृष्टि का वर्णन किया गया है।)।।३३।।

36” x 48” | Oil on Canvas

तुम तन-भामण्डल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मन्द।
कोटिशंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय।।३४।।

हे प्रभु! आपके प्रकाशमान भामण्डल की ज्योतिरूपी तेज तीनों लोकों के प्रकाशमान पदार्थों के प्रकाश को भी तिरस्कार कर देनेवाला है। आपके भामण्डल की प्रभा अपने प्रकाश से अनेकानेक प्रकाशमान सूर्यों के समान अधिक होने पर भी अपनी शीतलता द्वारा पूर्ण चन्द्रमण्डल से शोभायमान पूर्णमासी के चन्द्रमा को भी पराजित कर देती है। (यहाँ सातवें प्रातिहार्य भामण्डल का वर्णन है।)।।३४।।

48” x 36” | Oil on Canvas

स्वर्ग-मोख-मारग संकेत, परम-धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध, सब भाषागर्भित हित साध।।३५।।

हे दिव्य भाषापते! आपकी दिव्यध्वनि स्वर्ग और मुक्ति का मार्ग बताने के लिये प्रिय मित्र के समान है। त्रिलोक के जीवों के लिये सत्य धर्म और वस्तु का सम्यक् स्वरूप कहने में अद्वितीय चतुर है, विशाल अर्थ की द्योतक है और संसार की सब भाषाओं में परिणत होने के महान विलक्षण गुण से सहित है। (यहाँ आठवें प्रातिहार्य दिव्यध्वनि का वर्णन है।)।।३५।।

48" x 36" | Oil on Canvas

विकसित-सुवरन-कमल-दुति, नख-दुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहँ धरो, तहँ सुर कमल रचाहिं।।३६।।

हे जिनेन्द्र! खिले हुए नवीन स्वर्ण कमलों के समान दिव्य कान्तिवाले और सब ओर से व्याप्त नखकिरणों की प्रभा से अत्यन्त मनोहर लगनेवाले आपके पवित्र युगल चरण जहाँ-जहाँ धर्मोपदेश के लिये विहार करते समय रखे जाते हैं, वहाँ आगे-आगे भक्त देवता पहले से ही स्वर्ण कमलों की रचना करते जाते हैं।।३६।।

36" x 48" | Oil on Canvas

ऐसी महिमा तुम विषैं, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो जोत है, नहिं तारा-गण होय।।३७।।

हे जिनेश्वरदेव! धर्मोपदेश करते समय पूर्वोक्तरूप से जैसा आपका दिव्यवैभव हुआ करता था, वैसा दूसरे रागी-द्वेषी देवों का कभी नहीं हुआ। आपकी दूसरे देवों से तुलना ही क्या? जिस प्रकार अन्धकार को नष्ट करनेवाला जैसा प्रचण्ड प्रकाश दिनकर सूर्य में होता है, वैसा आकाश में चमकनेवाले अन्य ग्रह-नक्षत्रों में कहाँ होता है?।।३७।।

48" x 36" | Oil on Canvas

मद-अवलिप्त-कपोल-मूल अलि-कुल झंकारैं। तिन सुन शब्द प्रचंड क्रोध उद्धत अति धारैं।।
काल-वरन विकराल कालवत् सन्मुख आवै। ऐरावत सो प्रबल सकल जन भय उपजावै।।
देखि गयन्द न भय करै, तुम पद-महिमा लीन। विपति रहित सम्पति सहित, वरतैं भक्त अदीन।।३८।।

हे भगवन्! दिन-रात प्रवाहित होनेवाले मद से मलिन और चंचल कपोल-मूलों / गण्डस्थल प्रदेश पर मँडरानेवाले मत्त भौंरों के नाद से अत्यन्त क्रुद्ध, इन्द्र के ऐरावत हाथी के समान विशाल एवं मदमस्त हाथी को आक्रमण करते हुए देखकर भी आपके आश्रित भक्तों को किंचित् भी भय उत्पन्न नहीं होता है। आपके आश्रित जनों को भय कहाँ?।।३८।।

36” x 48” | Oil on Canvas

अति मद-मत्त-गयन्द कुम्भथल नखन विदारै। मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै।।
बाकी दाढ़ विशाल वदन में रसना लोलै। भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै।।
ऐसे मृगपति पगतलैं, जो नर आयो होय। शरण गये तुम चरण की, बाधा करै न सोय।।३९।।

जिसने बड़े-बड़े भीमकाय हाथियों के मस्तक को विदारण कर रक्त से लिप्त हुए उज्ज्वल गजमोतियों के ढ़ेर से भू-प्रदेश को अलंकृत किया हो, जो चौकड़ी बाँधकर आक्रमण करने के लिये तैयार हो - ऐसा भयंकर सिंह भी आपके चरणों का आश्रय लेनेवाले भक्त पर आक्रमण नहीं कर सकता। भले ही वह सिंह के बिल्कुल निकट पैरों के नीचे ही क्यों न आ गया हो। तात्पर्य यह है कि क्रूर हिंसक सिंह भी आपके भक्त के समक्ष स्वाभाविक क्रूरता का परित्याग कर देता है।।३९।।

36" x 48" | Oil on Canvas

प्रलय-पवनकर उठी आग जो तास पटन्तर। वमैं फुलिंग शिखा उतंग पर जलैं निरन्तर।।
जगत समस्त निगल्ल भस्मकर हैगी मानो। तड़तड़ाट दव-अनल जोर चहुँ दिशा उठानो।।
सो इक छिन में उपशमें, नाम-नीर तुम लेत। होय सरोवर परिनमै, विकसित कमल समेत।।४०।।

प्रलय काल की महावायु के तेज झकोरों से प्रचण्ड अग्नि के समान प्रज्वलित हुआ, आकाश में दूर-दूर तक चिंगारियों को फैंकता हुआ मानो समस्त संसार को भस्म करने की इच्छा से आगे बढ़ रहा हो – ऐसा महाप्रचण्ड दावानल भी आपके नाम स्मरणरूपी जल से शीघ्र ही पूर्णतः शान्त हो जाता है।।४०।।

36” x 48” | Oil on Canvas

कोकिल-कंठ-समान श्याम-तन क्रोध जलंता। रक्त-नयन फुंकार मार विष-कण उगलन्ता।।
फण को ऊँचो करै वेग ही सन्मुख धाया। तब जन होय निशंक देख फणिपति को आया।।
जो चाँपै निज पगतलैं, व्यापै विष न लगार। नाग-दमनि तुम नाम की, है जिनके आधार।।४१।।

जिस पुरुष के हृदय में आपके नामरूपी नागदमनी औषधि है, वह निर्भय होकर निःशंक हो, लाल आँखोंवाले क्रोध से उन्मत्त जो कोयल के कण्ठ समान काला हो और जो फण उठाकर डसने के लिये तैयार हो ऐसे भयंकर जहरीले सर्प को भी अपने दोनों पैरों से लांघ जाता है।।४१।।

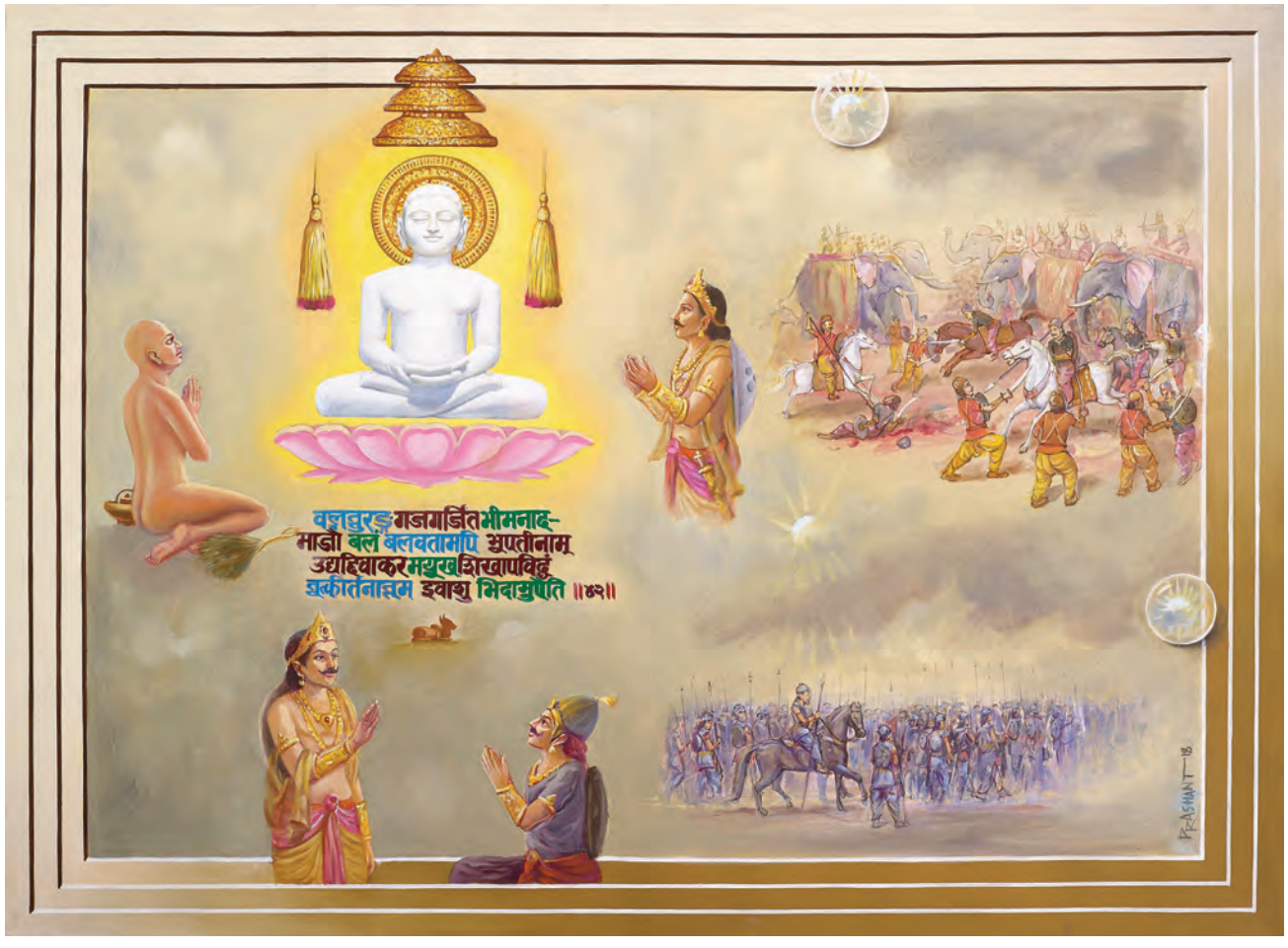

36” x 48” | Oil on Canvas

जिस रनमाहिं भयानक रव कर रहे तुरंगम। घन से गज गरजाहिं मत्त मानो गिरि जंगम।।
अति कोलाहल माहिं बात जहँ नाहिं सुनीजै। राजन को परचंड, देख बल धीरज छीजै।।
नाथ तिहारे नामतैं, सो छिनमाहिं पलाय। ज्यों दिनकर परकाशतैं, अन्धकार विनशाय।।४२।।

जिस प्रकार प्रातःकालीन उदित होते हुए सूर्य की किरणों से रात्रि का सघन अन्धकार नष्ट हो जाता है; उसी प्रकार आपके नामस्मरणमात्र से युद्धक्षेत्र में महाबलवान शत्रु राजाओं की वह सेना, जिसमें घोड़े हिनहिनाते हों, हाथी गरजते हों, बहुत भीषण कोलाहल मच रहा हो, वह सहज ही परास्त हो जाती है।।४२।।

36" x 48" | Oil on Canvas

मारे जहाँ गयन्द कुम्भ हथियार विदारै। उमगै रुधिर प्रवाह वेग जल-सम विस्तारै।।
होय तिरन असमर्थ महाजोधा बल पूरे। तिस रन में जिन तोर भक्त जे हैं नर सूरे।।
दुर्जय अरिकुल जीत के, जय पावैं निकलंक। तुम पद-पंकज मन बसै, ते नर सदा निशंक।।४३।।

हे जिनेन्द्र! उस भयंकर युद्ध में, जिसमें महा वीर योद्धा भी भालों की नोंक से आहत हाथियों के वेगवान रक्त प्रवाह को तैरने में व्याकुल हो रहे हों। ऐसे समय में भी आपके चरण-कमलरूपी वन का आश्रय लेनेवाले भक्त बहुत शीघ्र ही दुर्जेय शत्रुओं को सहजता से पराजित कर विजय प्राप्त करते हैं।।४३।।

36” x 48” | Oil on Canvas

नक्र चक्र मगरादि मच्छ करि भय उपजावै। जामैं बड़वा अग्नि दाहतैं नीर जलावै।।
पार न पावै जास थाह नहिं लहिये जाकी। गरजै अतिगम्भीर लहर की गिनती न ताकी।।
सुखसों तिरै समुद्र को, जे तुम गुन सुमराहिं। लोल-कलोलन के शिखर, पार यान ले जाहिं।।४४।।

हे नाथ! भयंकर मगरमच्छों, पाठीन-पीठ नामक जलचर प्राणियों और भयंकर प्रज्वलित वड़वानल के कारण तीव्रता से उछलती हुई तरंगों की चोटियों पर जिसकी नैया डगमगा रही हो, इस प्रकार काल के गाल में पहुँचे हुए समुद्र-यात्री भी आपके नामस्मरणमात्र से सकुशल समुद्र को पार कर लेते हैं।।४४।।

36” x 48” | Oil on Canvas

महा जलोदर रोग भार पीड़ित नर जे हैं। वात पित्त कफ कुष्ठ आदि जो रोग गहै हैं।।
सोचत रहैं उदास नाहिं जीवन की आशा। अति घिनावनी देह धरैं दुर्गन्ध-निवासा।।
तुम पद-पंकज-धूल को, जो लावैं निज-अंग। ते नीरोग शरीर लहि, छिन में होय अनंग।।४५।।

जो भयंकर जलोदर रोग से पीड़ित है और उसके भार से जिसकी कमर टेढ़ी हो गयी है, फलस्वरूप जीवन की आशा शेष नहीं रही है, ऐसे मरणासन्न असाध्य रोगी भी यदि आपके चरणकमलों की रजरूपी अमृत को शरीर पर लगा ले तो वह तत्क्षण ही कामदेव के समान अत्यन्त सुन्दररूप को प्राप्त कर लेते हैं।।४५।।

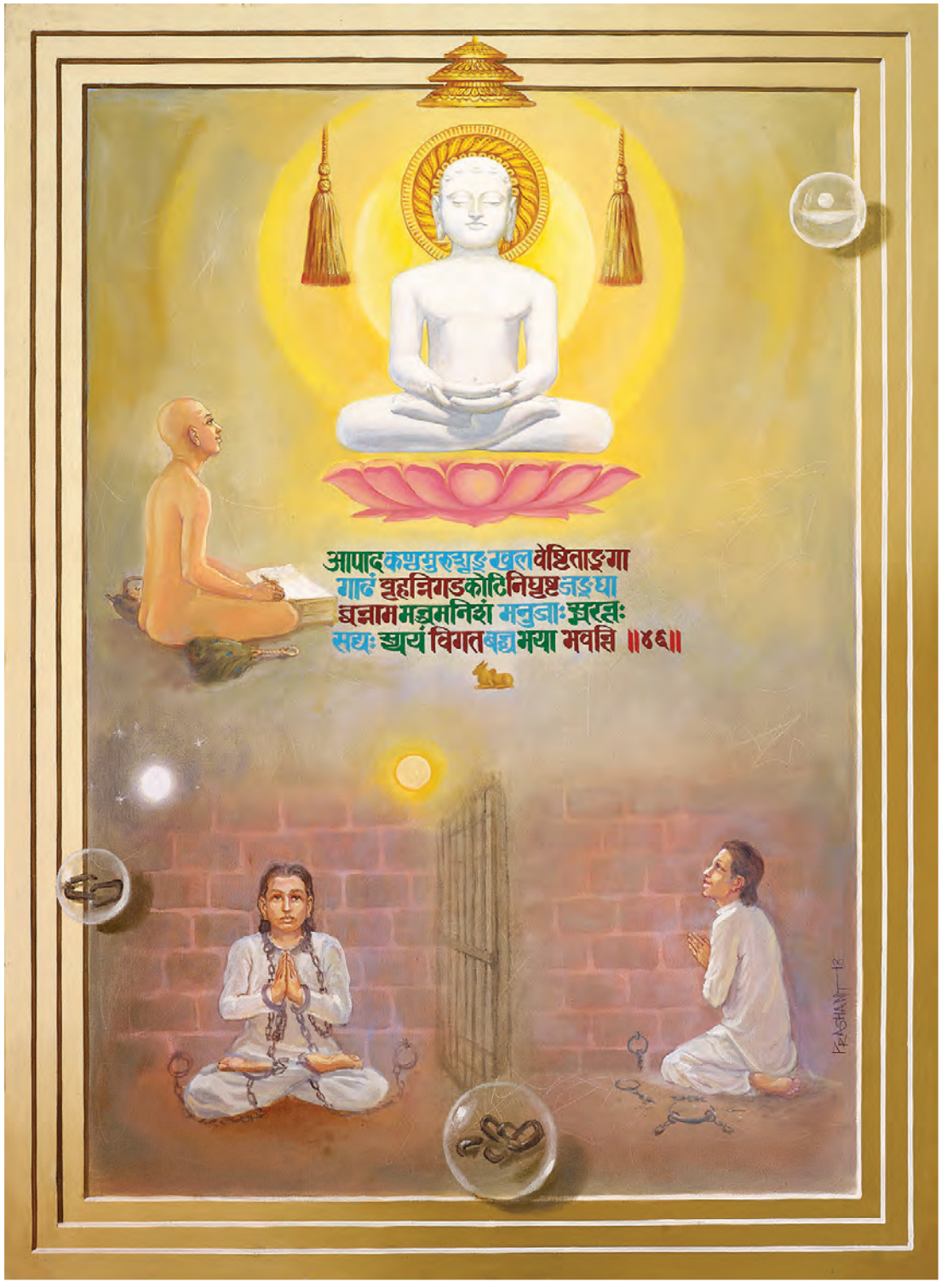

48" x 36" | Oil on Canvas

पाँव कंठतैं जकर बाँध साँकल अति भारी। गाढ़ी बेड़ी पैरमाहिं जिन जाँघ विदारी।।
भूख प्यास चिंता शरीर दुःखजे विललाने। सरन नाहिं जिन कोय भूप के बन्दीखाने।।
तुम सुमरत स्वयमेव ही, बन्धन सब खुल जाहिं। छिनमें ते संपति लहैं, चिंता भय विनसाहिं।।४६।।

जो पैर से लेकर कण्ठ तक मजबूत साँकलों से जकड़े हुए हैं, जिनकी जँघायें बड़ी-बड़ी बेड़ियों की रगड़ से बुरी तरह छिल गयी हैं, ऐसे कैदी पुरुष भी जब आपके नामरूपी मन्त्र का दिन-रात स्मरण करते हैं तो शीघ्र ही सहजतया बन्धन के भय से मुक्त हो जाते हैं ।।४६।।

36” x 48” | Oil on Canvas

महामत्त गजराज और मृगराज दवानल। फणपति रण परचंड नीर-निधि रोग महाबल।।
बन्धन ये भय आठ डरपकर मानो नाशै। तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशै।।
इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय। यातैं तुम पद-भक्त को, भक्ति सहाई होय।।४७।।

हे जिनेन्द्रदेव! जो बुद्धिमान मनुष्य आपकी स्तुति करनेवाले इस स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करता है, उसका मदोन्मत्त हाथी, सिंह, दावानल, सर्प, युद्ध, समुद्र, जलोदर और कारागार –इन आठ कारणों से उत्पन्न होनेवाला भय स्वयं ही भयभीत होकर शीघ्र ही विनष्ट हो जाता है।।४७।।

36" x 48" | Oil on Canvas

यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुनन सँवारी। विविध-वर्णमय-पूहुप गूँथ मैं भक्ति विथारी।।
जे नर पहिरे कंठ भावना मन में भावैं। 'मानतुंग' ते निजाधीन-शिव-लक्ष्मी पावैं।।४८।।

हे जिनेन्द्र भगवन्! मैंने भक्तिभाव से यह आपकी स्तोत्ररूपी माला तैयार की है, जो मनोहर वर्ण-अलंकाररूपी नाना प्रकार के पुष्पों से युक्त है, जो आपके गुणों से गूँथी गयी है। जो भक्तजन इस (आदिनाथ स्तोत्ररूपी माला) को अपने कण्ठ में सदैव धारण करता है, वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और उसे मोक्षलक्ष्मी स्वयमेव वरण करती है अर्थात् स्वयमेव प्राप्त होती है।।४८।।

चित्रकार परिचय

प्रशांत शाह

भारत के प्रसिद्ध कलाकार श्री प्रशांत शाह का जन्म आलंद, गुलबर्ग, कर्नाटक में सन् १९४९ में हुआ था। आपने अपनी कला-शिक्षा मुंबई की मशहूर कला संस्थान जे.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड आर्ट से प्राप्त की और जी.डी. आर्ट के स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

कलाकार प्रशांत शाह ने वर्षों से कला में अपनी खुद की एक भाषा विकसित की है, जिसका उपयोग वह विभिन्न माध्यमों में करते हैं। अपनी कला में विषय के अनुरुप वे स्क्रिबलिंग, तेल, एक्रिलिक या पानी के रंगों का उपयोग करते हैं। श्री प्रशांत शाह पेंटिंग, डिजाइन और जूनियर कलाकारों को प्रोत्साहित करने की रचनात्मक प्रक्रिया से जुडे हुए हैं, जिसके लिए उन्होंने एक ऑनलाइन आर्ट गैलरी, 'द पेंटरनेट एक्सचेंज' की स्थापना भी की है और वे उस के प्रबंध निर्देशक हैं। वे बॉम्बे आर्ट सोसाइटी के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। हाल ही में, उन्होंने पारंपारिक और लोक मुहावरों को आधुनिक संदर्भ में व्यक्त करने के लिए एक रचनात्मक प्रक्रिया की दिशा में काम किया है।

लगभग एक दशक से वे जैन मंदिर, परिदृश्य व संस्कृति को चित्रित करने की विभिन्न प्रक्रियाओं से संलग्न हैं। वे ललित कला अकादमी और जहाँगीर आर्ट गैलरी द्वारा आयोजित कई प्रदर्शनियों में स्वयं उत्सुक प्रतिभागी और कई युवा कलाकारों को अपना प्रदर्शन संयोजन करने में मार्गदर्शक रहे हैं। उन्होंने भारतीय चित्रों और प्राचीन वस्तुओं का एक विशाल संग्रह भी इकठ्ठा किया है। श्री प्रशांत शाह ने भक्तामर स्तोत्र के विषय में विभिन्न शैली में कार्य किया है। स्तोत्र को उन्होंने पेंटिंग के उपरांत ताम्रपत्र पर भी अंकित किया है। प्रस्तुत भक्तामर स्तोत्र चित्रों में उन्होंने पुरातन परम्परा से हटकर आचार्य के भावों तथा मूल सिद्धांतो की मुख्यता से चित्रण प्रस्तुत किया है।

www.gurukahanmuseum.org | info@gurukahanmuseum.org

GURU KAHAN ART MUSEUM

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West), Mumbai - 400 056. INDIA.
Tel. No: +91 22 2613 0820 / 2610 4912
info@vitragvani.com www.vitragvani.com /vitragvanee /c/vitragvanii

---

Museum Address:
Guru Kahan Art Museum Songadh - 364 250. Gujarat. INDIA.
info@gurukahanmuseum.org www.gurukahanmuseum.org
/gurukahanmuseum +91 82095 71103

9 789381 057520

॥भक्तामर॥

॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥

॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥

॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥

॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥

॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥
॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥ ॥भक्तामर॥

9 789381 057520